18 May 20

B.Ed-IInd

Sub- Work Education, Gandhiji's Nai Talim & Community Engagement.

गाँवों में कृषि उपक्रमों में सहभागिता

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ के ग्रामीण क्षेत्रों का मुख्य व्यवसाय कृषि अर्थात खेती करना है। गाँव में इस साधन का ज्यादा होना विद्यार्थियों को इस क्षेत्र की जानकारी देना भी विद्यालयों में शिक्षा का एक भाग होना चाहिए जिससे छात्र किसानों में एक जागृति उत्पन्न कर सकते है तथा पर्यावरण और कृषि के बीच संबन्धों की जानकारी दे सकते है पानी का सदुपयोग उर्वरकों की जानकारी रासायनिक खेत के लाभ हानि आदि समस्याओं के प्रति किसानों में एक नई ऊर्जा उत्पन्न कर सकते है। स्कूली पाठ्यक्रम में इस क्षेत्र से सम्बन्धित विषयों को वरीयता दी जानी चाहिए जिससे वे अनुभवजन्य ज्ञान प्राप्त कर इस क्षेत्र की जानकारी प्राप्त कर इसका व्यापक स्तर पर जीवन में प्रयोग कर सर्वांगीण विकास कर सकेंगे। हालाँकि अब किसान परंपरागत खेती के स्थान पर फसलों में माँग अनुरूप परिवर्तित करते रहते हैं जिसका परिवर्तन उनके जीवन पर देखा जा सकता है।

भारत की अधिकांश जनसंख्या गाँव में निवास करती है जिससे उनका संबन्ध किसी न किसी रूप में कृषि से होता ही है। वर्तमान नई पीढ़ी अब कृषि से दूर भाग रही है इसलिए पाठ्यक्रम में, कृषि से संबन्धित जैसे बागवानी, डेयरी फार्म, फूलो की खेती, दाले, तिलहन आदि फसलों की सामान्य जानकारी रखी जानी चाहिए जिससे कृषि के क्षेत्र में नई संभावनाओं को तलाश जाएगा। इस क्षेत्र में छात्रों की सहभागिता निम्न प्रकार से बढ़ाई जा सकती है -

1. जैविक खेती और शुष्क भूमि खेती की जानकारी देना।
2. बागवानी, बीज, फूल पौधे, फल, सब्जियों का निरीक्षण।
3. पौधे उगाने की आवश्यकता और महत्व का ज्ञान, स्कूलों में पौधों

Scanned with CamScanner

पौधों व सड़क पर लगाए जाने वाले पौधों की जानकारी होनी चाहिए।

4. जल को सावधानी पूर्वक प्रयोग लाए जाने की जानकारी देना।
5. ग्रामीण और ग्रामीण क्षेत्रों के बागवानी की जानकारी तथा शहरी क्षेत्रों में बागवानी की जानकारी देना।
6. सिंचाई के लिए जल संचय की व्यवस्था करना।
7. उर्वरकों व कीटनाशकों के लाभ हानि की जानकारी देना।
8. मृदा परीक्षण करना, मिट्टी और फसल के संबन्ध का ज्ञान।
9. वन संरक्षण, वन्य जीवन का अध्ययन।
10. कृषि उपकरणों में मशीनों की जानकारी देना।
11. कंपोस्टिंग और वर्मी कम्पोस्टिंग
12. कृषि शिल्प संचालन में भागीदारी।
13. सड़े अनाज का भराण।
14. कृषि के लिए स्वदेशी तरीके अपनाना और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ना।
15. स्थाई कृषि, वन और पर्यावरण के लिए स्वदेशी तरीकों की सूची तैयार करना।
16. जल को सावधानीपूर्वक संचय व प्रयोग में लाने की जानकारी।

Scanned with CamScanner